आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा
सत्र – 2020–21
विषय – आधार पाठ्यक्रम (हिन्दी भाषा)

पूर्णांक – 7.5 अंक

बी.एस.सी. (विज्ञान / गणित), बी.कॉम, बी.सी.ए. प्रथम वर्ष

नोट – 1 सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है–
2खण्ड (क) में 4 अंक एवं खण्ड (ख) में 3.5 अंक निर्धारित है–

खण्ड (क)

प्रश्न 1. पल्लवन कीजिये –
विपत्तियां मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ गुरू है।

प्रश्न 2. पल्लवन कीजिये –
आवश्यकता अविष्कार की जननी है।

प्रश्न 3. अनुवाद के कोई दो उद्देश्य बताइए।

खण्ड (ख)

प्रश्न 4. मुहावरे का अर्थ सहित प्रयोग कीजिए –
1. आकाश से बातें करना।
2. अंधे को दिशा दिखाना।

प्रश्न 5. निम्न लोकोक्तियों का अर्थ सहित प्रयोग कीजिए –
1. छूछन्दर के सिर में चमेली का तेल।
2. कोउ नृप होइ हमें का हानी।

प्रश्न 6. वाक्यों को शुद्ध कीजिए –
1. ईश्वर के अनेकों नाम है।
2. साहित्य और जीवन का घोर संबंध है।

किरोडीमल शा॰ कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
रायगढ़ (छ॰ग॰)

आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा
सत्र 2020-21
बी॰ ए॰ प्रथम वर्ष
विषय - हिन्दी भाषा

दिनांक
10.03.21
समय
04.30 से
05.30 तक

प्र॰1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. पल्लवन का परिभाषा लिखिए।
2. पत्र के प्रकार एवं नाम लिखिए।
3. ईदगाह किसकी रचना है?
4. देवनागरी लिपि की दो विशेषताएं लिखिए।
5. भारत वंदना के रचनाकार के नाम बताइए।
6. भोलाराम का जीव कहाँ चला गया था?
7. भोलाराम के जीव के साथ नारद की मुलकात कहाँ हुई थी?
8. हामिद ने तीन पैसे में क्या खरीदा था?

जगह भी हमारी ही है। अतः हमने अंधेरे गली मे होकर रखाई। चोर का उपद्रव बढ़ला गया क्योंकि उसने तो चोरी को कर्तव्य मान रखा है। इससे अच्छा तो हम यही चाहते है कि चोर का उपद्रव सह ले। इससे चोर को समझ आयेगी। इस सहन से हम देखते है कि चोर हम से भिन्न नही है। हमारे लिए सब सगे है।

यह अहिंसा वह स्थूल वस्तु नही है जो आज हमारी दृष्टि के सामने। किसी को ना मारना अहिंसा है। कुविचार मात्र हिंसा है। उतावलापन हिंसा है। मिथ्या भाषण हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जगत के लिए जो आवश्यक वस्तु है, उस पर कब्जा रखना भी हिंसा है। पर हम जो कुछ खाते है वह जगत के लिए आवश्यक है, जहा खड़े है वहां सैकड़ो सूक्ष्म जीव है पैरो तले कुचले जाते है यह जगह उनका है। फिर क्या आत्म हत्या कर ले तो भी निस्तार नही है, विचार मे देह के साथ ससंर्ग छोड़ दे तो अन्त मे देह हमे छोड़ देगी। यह मोह रहित स्वरूप सत्यनारायण है। यह दर्शन अधिरता से नही होते। यह समझदार की देह हमारी नही है वह हमे मिली हुई धरोहर है, इसका उपयोग करते हुए हमे आगे बढ़ना चाहिए।